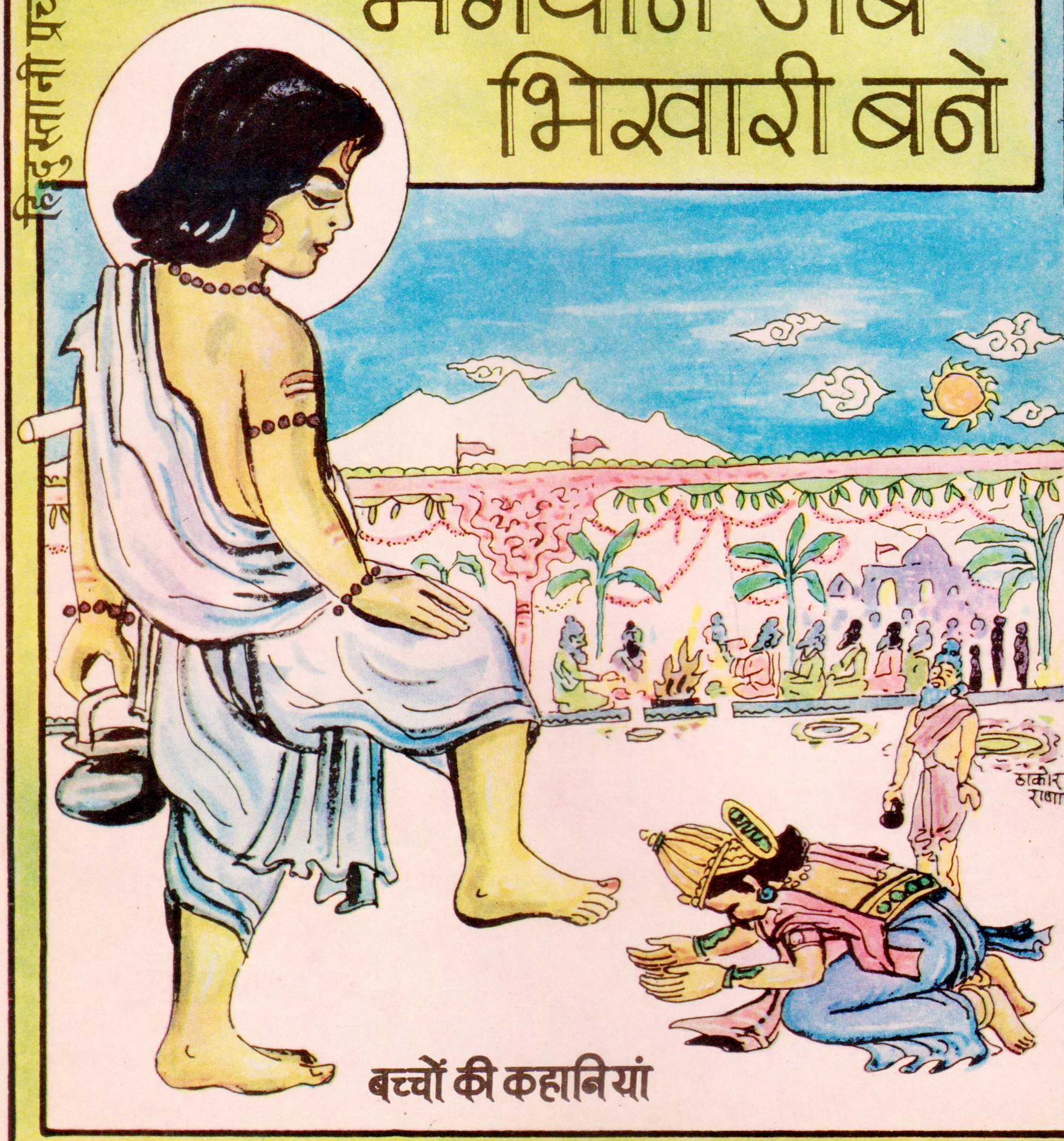
रामयतन सिंह 'भ्रमर'

भगवान जब भिखारी बने

हिंदुस्तानी प्रचार सभा
बम्बई



बच्चों की कहानियां

संपादक :
मूलशंकर भट्ट

चित्रकार :
ठाकोर राणा

प्रकाशक :
वाडीलाल डगली
मानद मंत्री
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
महात्मा गांधी मेमोरियल बिल्डिंग
७, नेताजी सुभाष रोड
बम्बई–४०० ००२

मुद्रक :
अकील दीवानजी
ऑनलुकर प्रेस
१६, सासुन डॉक
कोलाबा, बम्बई–४०० ००५

मूल्य :
दो रुपये

भगवान जब भिखारी बने

एक बार राक्षसों और देवताओं की घनघोर लड़ाई हुई। लड़ाई में देवताओं के राजा इन्द्र जीत गये और दैत्यों के राजा बलि की हार हुई। हारने के बाद राजा बलि हमेशा इसी फिक्र में लगा रहता था कि इन्द्र से अपनी हार का बदला कैसे चुकाये।

बलि के राजगुरू शुक्राचार्य ने इन्द्र पर विजय पाने के लिए बलि को विश्व-जित यज्ञ करने के लिए कहा। बलि ने गुरू का कहना मानकर, तन, मन और धन लगाकर यज्ञ पूरा किया। यज्ञ पूरा होने पर यज्ञकुंड से बहुत-सी अनोखी चीजें निकलीं – सोने का रथ, चमकीले रंग का घोड़ा, धनुष-वाण, तरकश-कवच और साथ ही उनके परदादा (प्रह्लाद) की कभी न मुरझानेवाले फूलों की एक माला निकली।

यज्ञ करने से बलि की ताकत बहुत बढ़ गयी और उसकी सेना इन्द्र से बदला लेने के लिए बेचैन हो उठी। पूरी तैयारी के साथ, समय देखकर राजा बलि ने इन्द्रलोक पर हमला कर दिया। इन्द्रपुरी के अमन-चैन और सुख-शांति को बलि



"समय देखकर राजा बलि ने इंद्रलोक पर हमला कर दिया।"

को सेना ने एक ही झोंके में खत्म कर दिया। बलि की फौज को देखते ही इन्द्रलोक में भगदड़ मच गयी। उसकी राक्षसी सेना आंधी-तूफान की तरह कहर ढाने लगी, और देखते-ही-देखते इन्द्रपुरी और नंदनवन को उसने उजाड़कर रख दिया।

बलि की अत्याचारी सेना के डर से इन्द्रपुरी त्रस्त थी। वहां के सब लोग अपनी-अपनी जान बचाने के लिए इधर-उधर पनाह खोजने लगे। बलि के डर से गायों ने जुगाली करना छोड़ दिया, पक्षियों ने चहकना भुला दिया। सबके होंठों से हंसी गायब हो गयी और सबके चेहरे पर एक भय छा गया।

परेशान इन्द्र, बलि की सेना से छिपते-छिपते अपने गुरू बृहस्पति के पास पहुंचे और इन्द्रपुरी पर बलि के हमले की खबर दी।

इन्द्र ने कहा, " गुरूदेव, बलि की शक्तिशाली फौज कयामत बरपा करती आगे बढ़ रही है। हमारी फौज मार खा-खाकर पीछे हट रही है। ऐसा लगता है कि बलि के क्रोध की आग में सारी दुनिया जल जायेगी। गुरूदेव, मेरी रक्षा करो, कुछ रास्ता बताओ।"

गुरू बृहस्पति ने इन्द्र को समझाया, "राजा, बलि को भृगु मुनि का आशीर्वाद मिला हुआ है और उनकी आध्यात्मिक शक्ति के बल पर ही बलि इतना बलवान हो गया है। इसलिए इस समय उसे लड़ाई में हराना नामुमकिन है। भगवान के सिवा दुनिया की कोई ताकत उससे जीत नहीं सकती।"

गुरू बृहस्पति ने इन्द्र को सलाह दी कि ऐसी मुसीबत के समय तुम लोग इन्द्रपुरी छोड़कर किसी दूसरी जगह चले जाओ। इतनी दूर कि बलि को तुम्हारी गंध भी न मिले।

इधर, सारे देवताओं की मां अदिति को जब इन्द्र के भाग निकलने की खबर मिली तो वे बहुत दुखी हुईं। पत्नी के दुःख से दुखी, कश्यप मुनि ने अदिति को आशीर्वाद देकर कहा कि तुम व्रत, पूजा और भगवान का भजन करो।

अदिति के भजन-पूजन से खुश होकर भगवान ने प्रकट होकर कहा, " तुम्हारी पूजा से मैं खुश हूं। चिंता मत करो। कुछ

समय बाद तुम्हारा बेटा बनकर मैं तुम्हारे बच्चों की रक्षा करूंगा, लेकिन यह भेद किसी को बताना नहीं।" अदिति भगवान के कदमों में गिरकर प्रार्थना करने लगी। उसे सपने में भी यह ख्याल नहीं था कि भगवान उसके पुत्र बनकर अवतार लेंगे।

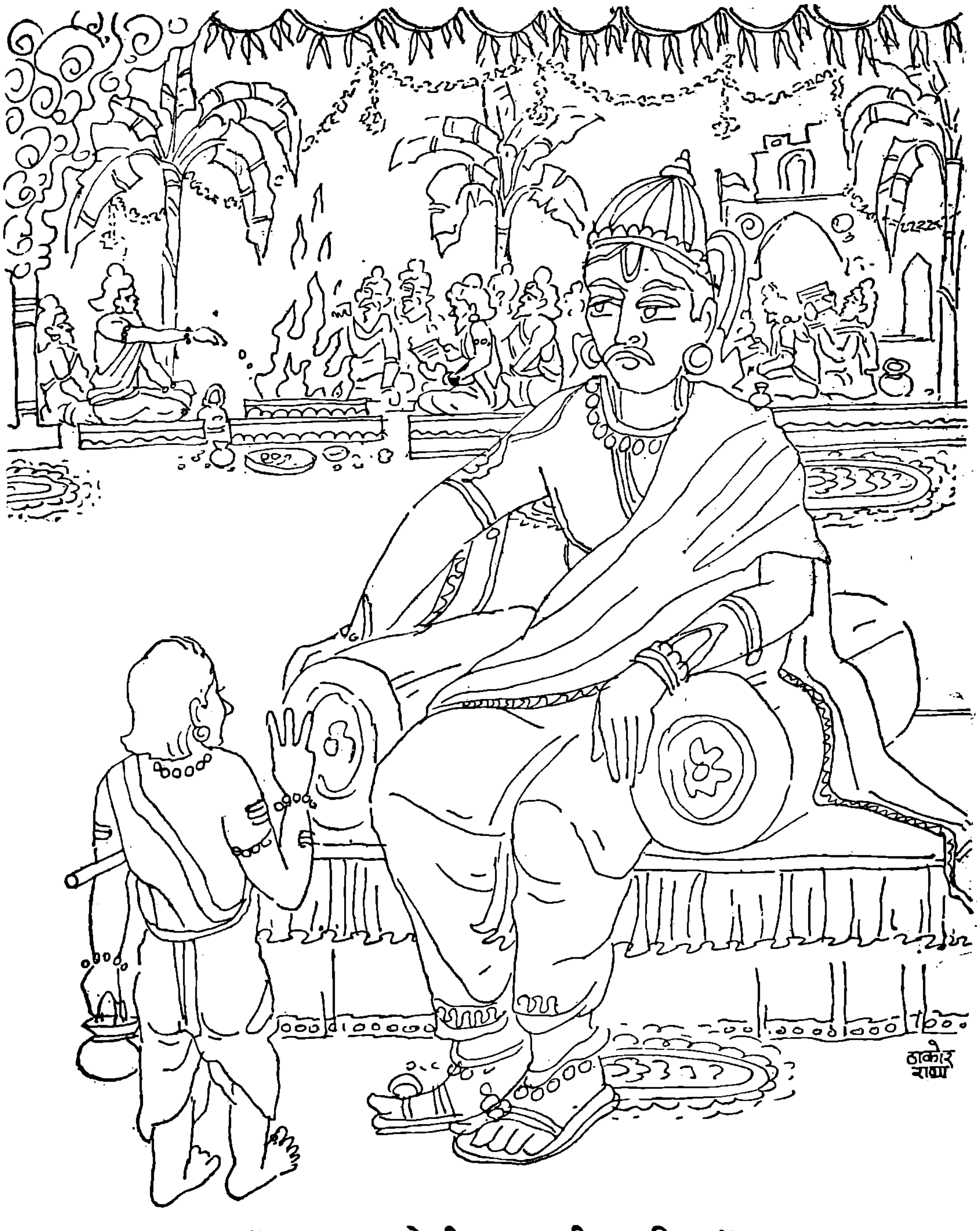
इधर बलि इन्द्रपुरी का राजा बन बैठा और वहां का सुख भोगने लगा। इन्द्रपुरी को देवताओं के इंजीनियर विश्वकर्मा ने बनाया था, इसलिए ऐसी इमारत दुनिया में दूसरी नहीं थी। भवन-निर्माण की हर कला का नमूना इन इमारतों में देखा जा सकता था। घर की चारदीवारी सोने की बनी थी, और फर्श पर हीरे-मोती जैसे कीमती पत्थर जड़े थे। इन्द्र की फुलवारी नंदनवन में पूरे साल साल वसंत का मौसम रहता था। फूलों की सुगंध सबको मदहोश कर देती थी। तरह-तरह के पक्षी गाते रहते थे। वहां की ठंडी, सुगंधित हवा के धीमे झोंके शरीर की सारी थकान दूर कर जाते थे।

इन्द्रपुरी सुन्दर परियों से भरी थी। गंधर्व और किन्नर वहां नाचते थे। मृदंग, पखावज और मुरली की धुन सुनाई पड़ती थी। और इस बहार को लूट रहा था दैत्यों का राजा बलि!

बलि में अपने दादा हिरणकश्यप की आसुरी वृत्ति तथा प्रह्लाद की दैवी शक्ति का विचित्र मेल था। दैवी वृत्ति के प्रबल होने से वह महादानी बन गया था। लेकिन उसके दान में भी अहंकार की आसुरी वृत्ति छिपी थी। बलि की आसुरी वृत्ति ने उसे इन्द्रलोक का ही नहीं, तीनों लोक का राजा बनने का सपना दिखाना शुरू किया। बलि ने इसके लिए अश्वमेध यज्ञ शुरू किया। सुबह से शाम तक वह दान दिया करता था। उसके दरवाजे पर जो भी आता, निराश नहीं जाता।

एक दिन भगवान बौने का रूप धरकर, हाथ में छत्र, दंड और कमंडल ले, साधुवेश में बलि के यज्ञमंडप में पहुंचे। बलि ने वामन वेशधारी भगवान विष्णु को ब्राह्मण-पुत्र मानकर उनका स्वागत-सत्कार किया और बाद में यज्ञमंडप में आने की वजह पूछी।

वामन ने कहा, "महाराज, मुझे तीन पग जमीन चाहिए, जिसे मैं अपने ही



"महाराज, मुझे तीन पग जमीन चाहिए।"

पैर से नापकर लूंगा । मैं शरीर से छोटा हूं, मेरी जरूरतें भी छोटी हैं । इसलिए यह छोटी-सी भीख मांगने आया हूं ।"

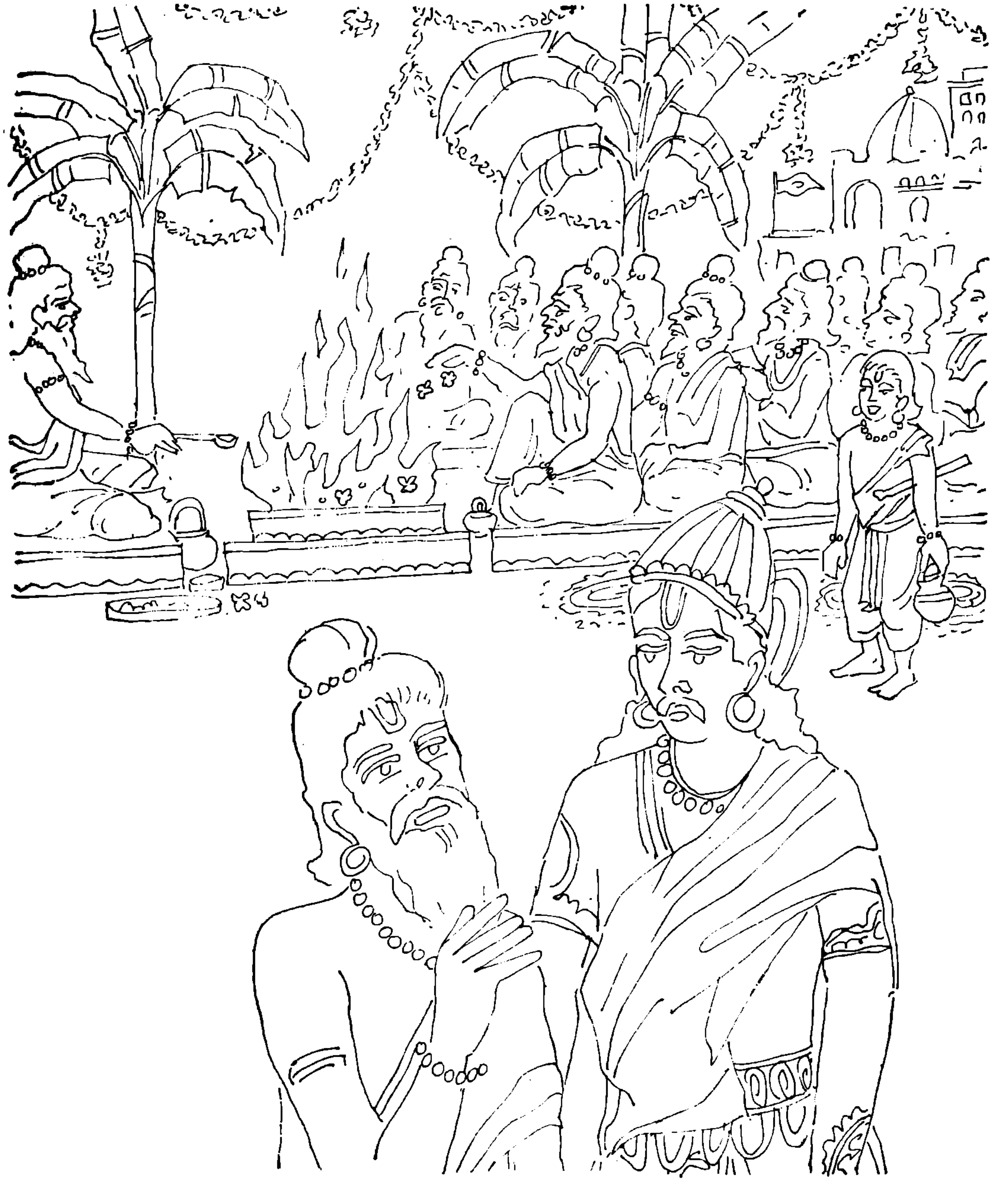
राजा बलि ने कहा, "जितनी जमीन चाहिए, उतनी मांग लो । ब्राह्मणकुमार, तुम तीन पग जमीन लेकर क्या करोगे ? तुम अभी नादान बच्चे हो, इसीलिए शायद तुम्हें मालूम नहीं है कि दुनिया के सबसे बड़े दानी राजा बलि से तुम जो चाहो मांग सकते हो – हीरे-मोती, जवाहरात, जमीन, घर कुछ भी मांग सकते हो ।"

बलि ने वामन को समझाया, "जिसे मुझसे एक बार मांग करने का मौका मिले, उसे इतना मांगना चाहिए कि जिन्दगी भर दुबारा उसे किसी से मांगना न पड़े । इसलिए हे ब्राह्मण-पुत्र, सोच-समझकर मांगो । डरो नहीं । हमारे दरबार में जो भी आता है, मालामाल होकर वापस जाता है," कहते-कहते बलि की छाती अहंकार से चौड़ी हो गयी ।

वामन महाराज ने राजा बलि की बातें बड़े गौर से सुनकर जवाब दिया, "मुझे सिर्फ तीन पग जमीन चाहिए । न इससे कम, न ज्यादा । जो आदमी तीन पग जमीन पाने से ही खुश है, उसकी इच्छा सारी दुनिया की दौलत पाने से भी पूरी नहीं हो सकती । संतोष और सब्र करनेवाला आदमी हमेशा सुखी रहता है और लाखों की संपत्ति पास में होने पर भी असंतोषी आदमी दुखी रहता है । जो ब्राह्मण संतोषी होता है, उसकी आध्यात्मिक शक्ति बढ़ती है । संतोष न होने पर आदमी जिन्दगी भर भटकता रहता है । उसे सुख नसीब नहीं होता । इसलिए हे दैत्यराज, मुझे केवल तीन पग जमीन दीजिए, वही मेरे लिए काफी है । आपके बराबर दानी इस दुनिया में कोई नहीं है । मुझे भरोसा है कि जो मैंने मांगा है, उसे आप जरूर देंगे ।"

बलि वामन की बातें सुनकर बड़े खुश हुए और बोले, "जैसा तुम चाहते हो, वैसा ही होगा । इतना छोटा दान तो मेरे नौकर-चाकर भी दे सकते हैं ।"

इसी बीच बलि के गुरू शुक्राचार्य वहां पहुंच गये । उन्होंने बलि को अकेले में ले जाकर समझाया, "दैत्यराज, यह बौना मामूली बालक नहीं है । यह तो विष्णु भगवान का अवतार है । उसकी मांग



"दैत्यराज, यह बौना मामूली बालक नहीं है।"

में दैत्यों का विनाश छिपा है। इसलिए तुम उसे कुछ न दो, नहीं तो अपनी माया से वह तुम्हारा सब-कुछ छीन लेगा। तीन पग में तो वह तीनों लोक नाप लेगा। तुम कहां रहोगे फिर? माना कि तुम बहुत दानी हो लेकिन यदि दाता दान देकर खुद मुसीबत में फंस जाये तो ऐसा दान नहीं देना चाहिए। अपने धन को पांच हिस्सों में बांटकर खर्च करनेवाला आदमी यहां भी सुखी रहता है और परलोक में भी। धन के पांच हिस्से इस प्रकार करने चाहिए—धर्म के लिए, यज्ञ के लिए, लाभ के लिए, खुद के आनंद के लिए, सगे-संबंधियों की भलाई के लिए।"

गुरू शुक्राचार्य की नसीहत सुनकर राजा बलि बड़ी विनम्रता से बोला, "गुरुदेव, मैं एक बार वचन दे चुका हूं।

"अपनी बात से मुकर जाना झूठ बोलने के बराबर है। और झूठ बोलने-वाले की दोनों लोकों में बदनामी होती है। इसलिए मैं आपकी बात कैसे मानूं? मैं मजबूर हूं।"

शुक्राचार्य ने कहा, "दैत्यराज, झूठ से नहीं घबराओ। प्रेमालाप करते समय, मित्रों से हंसी-मजाक करते समय, शादी तय करते समय, रोजी-रोटी कमाने के लिए, अपनी हिफाजत के लिए और गाय, ब्राह्मण को बचाने के लिए बोला गया झूठ, झूठ नहीं कहलाता। सच, इस शरीर का फूल और फल है, लेकिन जब दौलत की कमी से शरीर ही खत्म हो जायेगा तो सत्य कहां टिकेगा?"

बलि ने जवाब दिया, "गुरूदेव, मैं भक्त प्रह्लाद के खानदान में पैदा होकर, लालच में फंसकर अपने वचन से मुकर जाऊं? चाहे मेरा सारा राजपाट चौपट हो जाए, मेरी मौत आ जाए या मरने के बाद मुझे नर्क में ही क्यों न जाना पड़े, मैं अपने वचन से नहीं मुकर सकता।"

बलि ने अपनी बात पर जोर देते हुए कहा, "गुरुदेव, मौत के समय दुनिया की सारी दौलत पीछे छूट जाती है। इसलिए मेरी राय में जीते-जी दौलत को दान क्यों न कर दिया जाए? यदि दौलत का थोड़ा-सा हिस्सा किसी को दान किया जाए और वह संतुष्ट न हो तो दान बेकार हो जाता है। राजा दधीच ने देवताओं को अपने शरीर का दान दिया था। राजा शिबि ने इन्द्ररूपी बाज को अपने शरीर का मांस काटकर दिया था। फिर मैं पीछे कैसे रहूं?

" इस दुनिया में लड़ाई में मरनेवाले बहुत मिलेंगे लेकिन सच्चे दानी कम मिलेंगे। इसलिए यह वामन ब्राह्मण चाहे विष्णु का अवतार क्यों न हो, मेरा दुश्मन ही क्यों न हो, मुझे धोखा ही क्यों न दे, ब्राह्मण के वेश में आये हुए भिखारी को मैं तीन पग जमीन जरूर दान करूंगा।"

इतनी बातचीत के बाद राजा बलि ने बड़े आदर और भक्ति से वामन को दान देने का संकल्प किया। वामन का पैर धोने के लिए सोने के कलश में पानी मंगाकर, उनका पैर धोया, और उस पानी को अपने सिर पर छिड़का। उसी समय राजा बलि ने वामन को विष्णु भगवान के रूप में देखा।

वामन ने तीन पग जमीन नापनी शुरू की। उन्होंने एक पैर से सारी पृथ्वी नाप ली। दूसरे पैर से बाकी सारे लोक नाप लिए। तीसरे पैर के लिए कुछ नहीं बचा। वामन ने बलि से कहा, "तुम्हें अपने धन और राज का बड़ा घमंड है, लेकिन मुझे तीन पग जमीन देने का वादा भी तुम पूरा नहीं कर सके!"

बलि ने बड़ी विनम्रता से जवाब दिया, "भगवन, मैं अपने वचन का पक्का हूं। तीसरे पैर से मेरा सर नाप लीजिए।"

इस प्रकार वामन भगवान ने अपने तीसरे पग से उसका सर नापकर बलि की विश्वविजय की कामना को धूल में मिला दिया। बलि के अत्याचारी गुणों की वजह से आसुरी वृत्ति पनप रही थी और दैवी वृत्ति खत्म हो रही थी। दैत्यों का राज फैल रहा था और देवताओं की महिमा घट रही थी। भगवान ने वामन का रूप धारण करके असत्य पर सत्य की, बुराई पर अच्छाई की स्थापना की।

भगवान वामन ने बलि को समुचित दंड देने के बाद, उसकी दैवी वृत्ति को पुरस्कार भी दिया। बलि की पत्नी विंध्यावती की प्रार्थना से खुश होकर भगवान ने बलि को उसके सारे सगे-सम्बन्धियोंसहित 'सुतल लोक' में भेज दिया और जाते-जाते उसे यह आशीर्वाद दिया कि उस लोक में दुनिया की कोई भी चिंता तुम्हारे पास न आयेगी। वहां तुम सुख-दुख, हार-जीत की सीमा से परे रहोगे और सबसे बड़ी बात यह है कि मैं चौबीसों घंटे तुम्हारे दरवाजे पर खड़ा होकर पहरा दूंगा। ●

प्राण-दान

बहुत दिनों पहले की कहानी है। त्वष्ट्रा नाम के एक मुनि थे। उनकी और देवताओं के राजा इन्द्र की बड़ी दुश्मनी चल रही थी। इन्द्र को दुःख देने के लिए, उन्हें परेशान करने के लिए त्वष्ट्रा मुनि ने एक तीन सिरवाला राक्षस पैदा किया। उसका नाम त्रिशिरा रखा। त्रिशिरा अपने एक मुंह से वेद पढ़ता था, दूसरे से अमृत पीता था और तीसरे मुंह से देवताओं को निगल जाता था, और उसका यह तीसरा मुख सबसे ज्यादा चलता था। उसके डर से देवता और मुनि इधर-उधर जंगलों और गुफाओं में छिपने लगे। उसके बढ़ते अत्याचार से परेशान होकर, देवताओं और तपस्वियों की रक्षा करने के लिए इन्द्र ने उसका वध कर दिया।

त्रिशिरा के वध की खबर सुनकर त्वष्ट्रा मुनि बहुत दुखी हुए। इन्द्र को परेशान करने की इच्छा अब कैसे पूरी हो? उन्होंने एक महाबली राक्षस पैदा किया। यह बालक सूर्य का तेज और तपस्वी का बल लेकर पैदा हुआ था।

पैदा होते ही उसने त्वष्ट्रा मुनि से पूछा, "पिताजी, मेरे लिए क्या हुक्म



"सबसे पहले तप का नाश करना चाहिए।"

है ? मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूं ?"

त्वष्ट्रा ने कहा, "तुम्हारे भाई त्रिशिरा को इन्द्र ने मार डाला है। तुम्हें स्वर्ग लोक में जाकर इन्द्र से उसकी मौत का बदला लेना है। तुम्हारा नाम है वृत्रासुर !"

पिता की आज्ञा पाकर वृत्रासुर ने राक्षसों की एक बहुत बड़ी सेना तैयार की। उस समय कालकेय नाम के बड़े भयंकर और रणवीर राक्षस हुआ करते थे। वे वृत्रासुर के अधीन थे। अनेक प्रकार के हथियार लेकर वे इन्द्र आदि देवताओं पर हमला कर, उन्हें मारने और परेशान करने लगे।

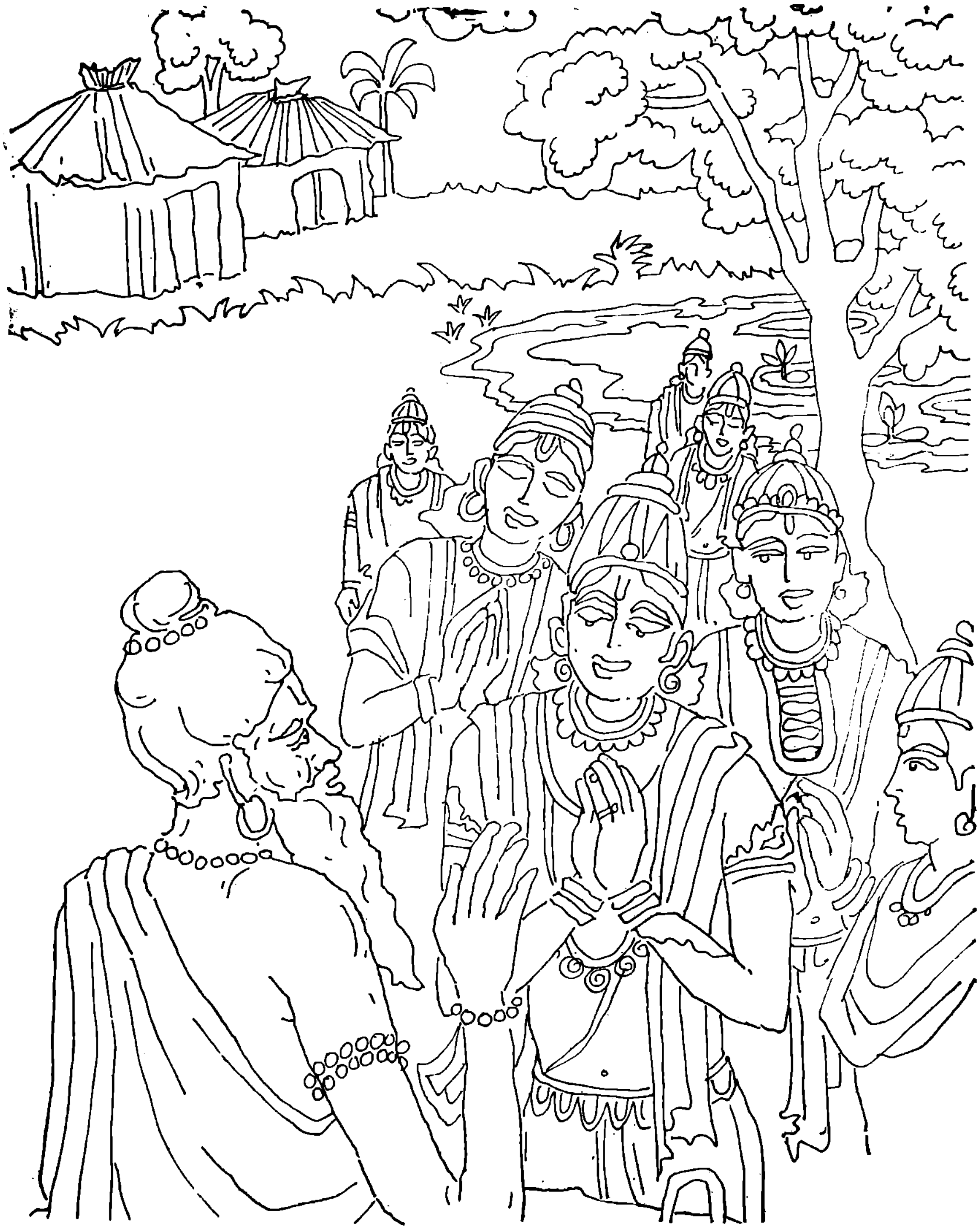
इतना सब तूफान करने पर भी जब इन्द्र का बाल भी बांका न हुआ तो वृत्रासुर को एक उपाय सूझा। उसने निश्चय किया कि सारे लोकों की रक्षा तपस्या से होती है, इसलिए सबसे पहले तप का ही नाश करना चाहिए। दुनिया में जो भी तपस्वी, धर्मात्मा और ज्ञानी हैं, उनका जल्दी ही नाश कर देना चाहिए। ऐसा करने से देवताओं का नाश हो जायेगा, और देवताओं और तपस्वियों का नाश होने पर दुनिया अपने आप नष्ट हो जायेगी और असुरों का राज्य स्थापित हो जायेगा।

ऐसा निश्चय करके वृत्रासुर छापामार लड़ाई करने लगा। दिन में समुद्र या जंगलों में वे लोग छिपे रहते और रात में बाहर आकर आसपास के आश्रमों और तीर्थस्थानों के मुनियों को खा जाते। उनका अत्याचार यहां तक बढ़ा कि सारी दुनिया में ऋषि-मुनियों की हड्डियां दिखाई देने लगीं। ऐसा मालूम होने लगा कि वृसुत्रार धरती को देवताओं और तपस्वियों से खाली कर देगा। हड्डियों के ढेर से देवताओं में आतंक छा गया।

वृत्रासुर के अत्याचार से परेशान सब देवता उसको मारने का उपाय सोचने लगे।

एक दिन इन्द्र के साथ सभी ब्रह्मा जी के पास गये।

ब्रह्मा ने उनसे कहा, "देवताओ, तुम जो काम करना चाहते हो, वह मुझसे छिपा नहीं है। मैं तुम्हें वृत्रासुर के वध का उपाय बताता हूं। भूलोक में दधीच नाम के एक बड़े उदार हृदय



" देवताओं ने दधीच मुनि को प्रणाम किया ।"

तपस्वी हैं। तुम सब जाकर उनसे प्रार्थना करो। यदि वे खुश होकर तुम्हें वर देने को तैयार हों तो उनसे कहना कि, मुनिवर, तीनों लोकों के हित के लिए आप हमें अपनी हड्डियां दे दीजिए। वे देह त्यागकर तुम्हें अपनी हड्डियां दे देंगे। उनकी हड्डियों से तुम एक छह दांतोंवाला बड़ा भयंकर वज्र बनाना। उसी वज्र से तुम लोग वृत्रासुर का वध कर सकोगे।"

ब्रह्माजी के इस तरह कहने पर सभी देवता दधीच ऋषि के आश्रम में गये। वहां दधीच मुनि के दर्शन कर, उनके चरणों में प्रणाम किया और ब्रह्माजी के कहने के मुताबिक उनसे वरदान देने की प्रार्थना की।

दधीच मुनि ने बहुत खुश होकर कहा, "देवगण, तुम्हारी जिसमें भलाई हो, ब्राह्मण और तपस्वियों की रक्षा हो, मैं वही करूंगा।" इतना कहकर दधीच ध्यानस्थ हो गये और उनकी जीवन-लीला समाप्त हो गयी।

देवताओं ने उनके मृत शरीर से हड्डियां ले लीं और विश्वकर्मा ने उन हड्डियों से एक भयंकर वज्र तैयार किया।

देवताओं के राजा इन्द्र ने वह वज्र लेकर वृत्रासुर पर धावा बोल दिया। राक्षसगण अस्त्रों-शस्त्रों के साथ वृत्रासुर की रक्षा कर रहे थे। दोनों में भयंकर लड़ाई ठन गयी। आखिर में बहुत नाराज होकर इन्द्र ने दधीच ऋषि की हड्डी से बने वज्र से वृत्रासुर पर वार किया। उस वज्र की चोट से वृत्रासुर राक्षस जमीन पर गिर पड़ा।

किसी के अमूल्य त्याग से वह हथियार बना था। उसका वार भला खाली कैसे जा सकता था! वृत्रासुर के मरने से सारे लोग आनन्द से नाच उठे। देवता और ऋषि-मुनि इन्द्र को बधाई देने लगे।

इस प्रकार दधीच ऋषि ने अपना प्राण-दान करके धरती का दुख दूर किया, और अत्याचारी दैत्यों से देवताओं की रक्षा की। पृथ्वी लोक में दधीच के त्याग की चर्चा घर-घर में होने लगी, और वह कहानी आज भी भूली नहीं गयी है। ●

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा की स्थापना १९३८ में महात्मा गांधी की प्रेरणा तथा पेरीन बहन केप्टन के सद्प्रयत्नों से हुई थी। इस संस्था की कोशिश ऐसी राष्ट्रभाषा विकसित करने की रही है, जिसे आम जनता आसानी से समझ सके और जो नागरी व उर्दू दोनों लिपियों में लिखी जा सके। वह भाषा है हिन्दुस्तानी!

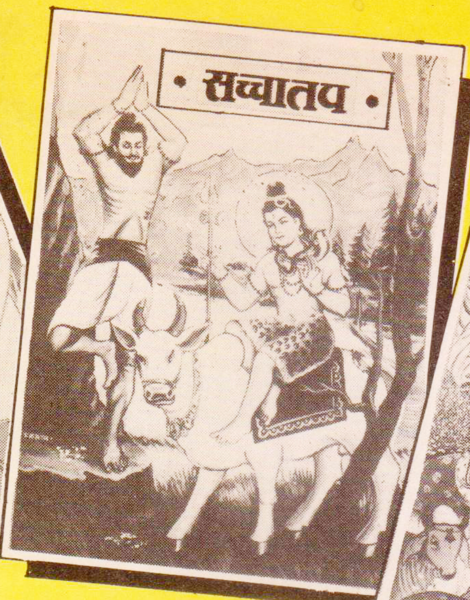
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा दुनिया के सभी धर्मों से चुनी हुई, ज्ञान और आनन्द से भरी कहानियों की एक सौ किताबों का जो सेट बच्चों के लिए तैयार कर रही है, यह उसकी पांचवीं किश्त है। इस सेट के हर किताब की कीमत दो रुपये होगी।



हमारे आगामी प्रकाशन

- राजा महाजनक
- संत जलाराम
- कंजूस इल्लीस
- कूरगडु मुनि
- कण देवता
- बक राक्षस का वध
- हनुमान
- स्वामी विवेकानंद
- सुनहरा नेवला
- भाई हो तो भरत जैसा









बच्चों की कहानियां

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
महात्मा गांधी मेमोरियल बिल्डिंग
बम्बई-४०० ००२











